डॉ. बी. आर. अम्बेडकर केंद्रीय पुस्तकालय, ज. ने. वि.

द्वारा आयोजित

पुस्तक लोकार्पण एवं चर्चा सत्र में

आप सादर आमंत्रित हैं

"अनुवाद अध्यन का परिदृश्य"

प्रो. देवशंकर नवीन

मुख्य अतिथि

डॉ. प्रमोद कुमार

कुलसचिव, ज. ने. वि.

डॉ. रामशरण गौड़

अध्यक्ष, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड

विशिष्ट वक्ता

श्री मदन कश्यप
विशिष्ट कवि, चिन्तक

प्रो. गोविन्द प्रसाद
अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, ज.ने.वि

डॉ. जगदीश शर्मा,
निदेशक, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, IGNOU

तिथि एवं समय

24 अगस्त 2017

सायं 3.30 बजे

स्थान

समिति कक्ष, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर केंद्रीय पुस्तकालय, ज.ने.वि.

कार्यक्रम :

- स्वागत वक्तव्य : डॉ. रमेश चन्द्र गौड़, विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष, ज.ने.वि
- पुस्तक परिचय : प्रो. देवशंकर नवीन, भारतीय भाषा केंद्र, भाषा, ज.ने.वि.
- लोकार्पण एवं वक्तव्य: प्रो. गोविन्द प्रसाद, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. जगदीश शर्मा, श्री मदन कश्यप, डॉ. रामशरण गौड़
- धन्यवाद प्रस्ताव

चाय अल्पाहार, 4.30 बजे सायं

निवेदक

डॉ. रमेश चन्द्र गौड़
विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष, ज.ने.वि.
E-mail: rcgaur@mail.jnu.ac.in **(M) 9810487158**

अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य

देवशंकर नवीन

प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार

मूल्य रु. 150/- पृ. 208 ISBN 978-81-230-2008-2

भारतीय अनुवाद की परम्पराओं पर केन्द्रित विशिष्ट पुस्तक ***अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य*** देवशंकर नवीन (प्रोफेसर, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) की नवीनतम कृति है। सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में लेखक ने अनुवाद के इतिहास, परंपरा, प्रयोजन, लक्ष्य आदि के साथ-साथ अंतरानुशासनिक शैक्षिक शाखा के रूप में अनुवाद अध्ययन के महत्त्व एवं विश्व साहित्य की अवधारणा, तुलनात्मक साहित्य के अस्तित्व और बहूद्देश्यीय पाठ्यक्रमों की कल्पना में अनुवाद की भूमिका पर गंभीरता से विचार किया है। वस्तु एवं विचार के विनिमय में अनुवाद की महत्ता दुनिया के सभी देशों में प्राचीन काल से रही है। दुनिया भर के देशों में बहुभाषिकता के बावजूद आपसी संवाद, व्यापार तथा अन्य संबंध अनुवाद की वजह से ही विकसित और प्रगाढ़ हुए हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहां कोस-कोस पर बोली बदलती हो, वहां संप्रेषण का सारा श्रेय अनुवाद को ही जाता है। इस समय भारत में 35 से अधिक विश्वविद्यालयों में अनुवाद अध्ययन की पढ़ाई विभिन्न स्तरों पर हो रही है। लिहाजा यह पुस्तक शिक्षकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है।

Anuvad Adhyayan Kaa Paridrishya

(The Scenario of the Translation Studies)

Deo Shankar Navin

Publication Division, Ministry of Information & Broadcasting, GOI

Price Rs. 150.00 P. 208 ISBN 978-81-230-2008-2

The significant book ***Anuvad Adhyayan Ka Paridrishya (The Scenario of the Translation Studies)*** written by Deo Shankar Navin (Professor, Centre of Indian Languages, Jawaharlal Nehru University, New Delhi) is the most recent publication on traditions of Indian translation. In this book, published by the Publication Division of Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, the author has placidly placed his thoughts on the history, tradition, purpose, aim etc of the Translation along with the importance of translation study as an interdisciplinary educational branch and the concept of world literature, the existence of comparative literature and the concept of multicultural courses. For the exchange of things and thoughts, the translation has been playing its vital role since the ancient period of civilisation in all the countries around the world. In spite of multilingualism if the mutual dialogue, trade and other relations have been developed and intensified, the credit goes to translation only. In a multilingual country like India, where there is a numerous change of dialects miles to miles, the whole credit for communication is always stands for translation. Presently, the teaching of translation studies is in existence at various levels in more than 35 universities in India. Obviously, this book is profoundly significant for the teachers, students and researchers as well.